डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

पाठ्य सामग्री,

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 18.07.2020

व्याख्यान संख्या-16 (कुल सं. 52)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

मकराकृति गोपाल के, कुण्डल सोहत कान।

धस्यो समर हिय गढ़ मनो, ड्योढ़ी लसत निसान।।

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' से उद्धृत है। इसके रचयिता रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि बिहारी हैं, जिनकी रचना 'बिहारी सतसई' हिन्दी साहित्य में लोकप्रियता के क्षेत्र में रामचरितमानस के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक मानी जाती है।

प्रस्तुत दोहे का प्रसंग यह है कि सखी नायक के पास जाकर उन्हें नायिका का वर्णन सुना कर आयी है और नायिका का वर्णन सुनकर नायक

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

पर कामदेव का जो प्रभाव पड़ा है उसका वर्णन करती हुई कहती है कि उसके हृदय को कामदेव ने वशीभूत कर लिया है, जिसका प्रमाण इस बात से मिलता है कि कंपन के कारण उनके कानों के कुंडल थरथरा रहे थे।

सखी के शब्दों में कवि कहते हैं कि गोपाल के कानों में मकर की आकृति वाले कुंडल ऐसे शोभित हैं मानो कामदेव उनके हृदय रूपी गढ़ में पैठ गया है; अर्थात प्रवेश कर गया है और निशान ड्योढ़ी पर आ फहरा रहा है। तात्पर्य है कि ये कुंडल कामदेव रूपी राजा की ध्वजा के समान है जो घर के द्वार पर फहरा रही है।

प्रस्तुत संदर्भ को स्पष्ट करने के लिए यह ध्यातव्य है कि जब कोई राजा किसी अन्य राजा से भेंट के लिए उसके घर में जाता है तो राजा तो भीतर चला जाता है परंतु उसके ध्वजा आदि राजचिह्न द्वार पर ही रहते हैं। इसी संदर्भ में उत्प्रेक्षा अलंकार का उत्तम प्रयोग करते हुए कवि संकेत दे रहे हैं कि कामदेव रूपी राजा श्रीकृष्ण के हृदय रूपी गढ़ में प्रवेश कर गये हैं और उसके प्रमाण स्वरूप थरथराते हुए कुंडल ऐसे लगते हैं जैसे अंदर गये हुए राजा के ध्वज द्वार पर फहरा रहे हों।

प्रस्तुत दोहे के संदर्भ में यह ध्यातव्य है कि ऊपर लिखा हुआ पाठ जो कि हमारी पाठ्य पुस्तक में स्वीकृत है, बिहारी सतसई की हरि प्रकाश टीका तथा रस चंद्रिका के अनुसार है जिसे लाला भगवानदीन ने 'बिहारी-बोधिनी' में

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

स्वीकार किया है; परंतु बिहारी सतसई के संपादन के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण जिन पाँच पुस्तकों को आधार स्वरूप माना जाता है उनमें इनके पाठ कुछ भिन्न हैं। उनके अनुसार दूसरी पंक्ति इस प्रकार होती है:-

धरयौ मनौ हिय-धर समरु, ड्यौढ़ी लसत निसान।।

इस पाठ के अनुसार दूसरी पंक्ति का अर्थ इस प्रकार होगा:-

"मानो उनके हृदय रूपी देश को कामदेव ने जीत लिया है, इसलिए उनके ध्वज ड्योढ़ी पर फहरा रहे हैं।"

दोनों स्थितियों में शाब्दिक अंतर के बावजूद भाव समान ही रहते हैं। फिर भी, बिहारी रत्नाकर के स्वनामधन्य संपादक ने माना है कि मूलतः बिहारी ने पूर्वोक्त पाठ ही लिखा होगा और बाद में लेखकों के प्रमाद से बाद वाला पाठ बन गया होगा, क्योंकि इन शब्दों में आसानी से इतना भर अंतर हो सकता है।

इस दोहे में कान की उत्प्रेक्षा ड्योढ़ी से करने से यह भाव अभीव्यंजित होता है कि कामदेव के हृदय में प्रवेश का मार्ग कान ही है। तात्पर्य यह है कि नायक पर कामदेव का प्रभाव नायिका के गुण सुनने के द्वारा ही हुआ है। कुंडल को 'मकराकृति' कहने का तात्पर्य है कि क्योंकि इन कुंडलों को कामदेव

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

के ध्वज के समान कहा गया है और कामदेव के ध्वज पर मकर के निशान बने होते हैं, इसलिए कुंडल को मकराकृति कहकर कवि ने स्वाभाविकता बरकरार रखी है। 'समरु' का तात्पर्य प्रस्तुत संदर्भ में कामदेव है। यह शब्द तत्सम 'स्मर' का तद्भव रूप है। 'ड्योढ़ी' पहले जमाने में राजाओं अथवा अन्य सामंत आदि धनी लोगों के द्वार पर भीतर की ओर से बनायी गयी उन दो दीवारों को कहते थे जो परस्पर ड्योढ़ी करके बनायी जाती थी ताकि बाहर से भीतर का सामना न हो पाये। इन्हीं ड्योढ़ी दीवारों के कारण उनके द्वार भी ड्योढ़ी कहलाते थे; और सामान्य रूप से द्वार ही ड्योढ़ी के नाम से प्रसिद्ध हो गये थे। कान की बनावट भी घुमाव-फिराव युक्त होने के कारण कवि ने कान को ड्योढ़ी माना है। 'लसत' शब्द का सामान्य अर्थ शोभित होना अथवा विलास होता है, परंतु प्रस्तुत संदर्भ में उसका अर्थ लहराना अथवा फहराना है। निशान उस ध्वजा को कहते हैं जिस पर उसे धारण करने वाले का कोई स्वीकृत चिह्न बना रहता है। पहले प्रत्येक बड़े राजा के ध्वज पर उनके विशिष्ट निशान बने होते थे, इसलिए उन ध्वजों को निशान कहा जाता है। कामदेव की ध्वजा पर मकर का चित्र बना रहता है, इसलिए उन्हें मकरध्वज कहते हैं।

प्रस्तुत दोहे में 'उक्तविषया वस्तूत्प्रेक्षा' अलंकार है।